पाठ–15

एक और गुरु–दक्षिणा

5KP56U

– राजे राघव

प्राचीन काल में विद्यार्थी गुरु के आश्रम में रहकर अध्ययन करते थे। गुरु समय–समय पर अपने शिष्यों की बुद्धि की परीक्षा लेते थे। इससे शिष्य के निपुण होने का ज्ञान होता था। शिक्षा पूरी होने पर विद्यार्थी अपने गुरु को स्वेच्छा से गुरु–दक्षिणा देते थे। कभी–कभी गुरु उनकी परीक्षा लेने के लिए भी गुरु दक्षिणा माँग लेते थे। इस कथा में एक अनोखी गुरु–दक्षिणा देने का विवरण हम पढ़ेंगे।

इस पाठ में हम सीखेंगे– विशेषण–विशेष्य, क्रिया, सामासिक शब्दों का सामान्य ज्ञान, सारांश लिखना।

एक थे ऋषि। गंगा तट पर उनका आश्रम था; मीलों लंबा–चौड़ा। बहुत–से शिष्य आश्रम में रहते थे। आश्रम में अनेक गाएँ थीं। हिरनों के झुंड आश्रम में चौकड़ी मारते, उछलते–कूदते फिरते थे।

ऋषि के शिष्यों में तीन प्रमुख शिष्य थे। तीनों ही अस्त्र–शस्त्र में निपुण, शास्त्र–ज्ञान में पारंगत, बोलचाल में मीठे, स्वभाव में विनम्र, धरती की तरह सहनशील, सागर की तरह गंभीर और सिंह के समान बलशाली थे।

वह पुराना जमाना था। उस समय आश्रम की गद्दी का अधिकारी होना ऐसा ही था, जैसे किसी राज–सिंहासन पर बैठ जाना। राजा स्वयं ऋषि–मुनियों के आगे सिर झुकाते थे।

ऋषि अपने तीनों शिष्यों से बहुत प्रसन्न थे। उन्हें वे प्राणों के समान प्रिय थे। मगर एक समस्या थी। ऋषि काफी बूढ़े हो गए थे। वे चाहते थे कि अपने सामने ही उन तीनों में से किसी एक को आश्रम का मुखिया बना दें। मगर बनाएँ किसे? यह समस्या भी छोटी नहीं थी। तीनों ही एक–से बढ़कर एक आज्ञाकारी थे, योग्य थे और सच्चे अर्थों में मुखिया बनने के अधिकारी थे।

ऋषि सोचते रहे, सोचते रहे। आखिर एक दिन उन्होंने तीनों को अपने पास बुलाया और कहा, "प्रियवर! तुम तीनों ही मुझे प्रिय हो। मैंने जी–जान से तुम्हें पढ़ाया–लिखाया और अस्त्र–शस्त्र चलाने की शिक्षा दी है। मुझे जो–जो विद्याएँ आती थीं, तुम्हें सब सिखा दीं। अब केवल गुरुमंत्र सिखाना बाकी है। गुरुमंत्र किसी एक को ही बताऊँगा। जिसे गुरुमंत्र बताऊँगा, वही मेरी गद्दी का अधिकारी होगा। मैं तुम तीनों की परीक्षा लेना चाहता हूँ।"

ऋषि की बात सुनकर तीनों ने सिर झुका लिया। वे बोले, "गुरुदेव, ऐसा कौन–सा काम

शिक्षण–संकेत– गुरुओं का शिष्यों के प्रति तथा शिष्यों का गुरुओं के प्रति व्यवहार पर चर्चा करें। उदाहरण स्वरूप आरुणि/एकलव्य की कथा संक्षेप में बताएँ। इस प्रसंग के साथ बच्चों को पाठ से जोड़ें। बच्चों को कहानी पढ़ने के लिए कहें, कहानी पर मौखिक प्रश्नोत्तर करें।

है, जो हम आपके लिए नहीं कर सकते?''

ऋषि मुस्कराकर बोले, ''यह मैं जानता हूँ। फिर भी परीक्षा, परीक्षा है। तुम तीनों अलग–अलग दिशाओं में जाओ और अपने श्रम से कमाकर मेरे लिए कोई अद्‌भुत भेंट लाओ। जिसकी भेंट सबसे अधिक सुन्दर और मूल्यवान होगी, वही गद्‌दी का अधिकारी होगा। ध्यान रहे, एक वर्ष में वापस आना भी जरूरी है।''

ऋषि की आज्ञा पाकर तीनों शिष्य चल पड़े। वे मन–ही–मन योजनाएँ बनाते चले जा रहे थे। उनमें से एक किसी राजा के पास जा पहुँचा। दरबार में जाकर उसने नौकरी करने की इच्छा प्रकट की। राजा तो ऋषि को जानते ही थे। उनका शिष्य कितना योग्य होगा, यह जानने में भी उन्हें देर न लगी। राजा ने उसे तुरंत अपने यहाँ रख लिया।

दूसरा शिष्य समुद्र पर पहुँचा। वह मछुआरों की बस्ती में गया और उनसे गोता लगाने की विद्या सीखने लगा। कुछ ही दिनों में वह भी कुशल गोताखोर बन गया।

तीसरा शिष्य चलते–चलते एक गाँव में पहुँचा। गाँव उजाड़ था। घर थे, जानवर थे, बच्चे थे, महिलाएँ थीं, मगर पुरुष एक भी नहीं था। उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। मालूम पड़ा कि यहाँ अकाल पड़ा है। कई वर्षों से पर्याप्त वर्षा नहीं हुई है। सभी लोग सहायता के लिए राजा के पास गए हैं।

वह सोच में पड़ गया। फिर चल पड़ा अपने रास्ते पर। मगर उसे ज्यादा दूर नहीं जाना पड़ा। सामने से गाँववालों की भीड़ आ रही थी। वे उदास थे और राजा को बुरा–भला कह रहे थे।

यह जानकर ऋषि के शिष्य को हँसी आ गई। एक राहगीर को हँसता देख गाँववालों को बुरा लगा। वे बोले– ''आप हँसे क्यों?''

''हँसी तो मुझे तुम्हारी मूर्खता पर आ रही है।''

''हमारी मूर्खता पर! अकाल ने हमें तबाह कर दिया है। भूखों मरने की नौबत आ गई है। हम सहायता के लिए राजा के पास गए थे। उसने भी हमारी सहायता नहीं की। आप हमें मूर्ख बता रहे हैं!''

''हाँ, मैं ठीक कह रहा हूँ। तुम सैकड़ों आदमी मिलकर कुछ नहीं कर सकते, तो राजा अकेला क्या कर लेगा? आदमी सहायता करने के लिए पैदा हुआ है।''

ऋषि के शिष्य की बात सुनकर सारे लोग सोच में पड़ गए। वे बोले, ''भैया, तुम तो चमत्कारी लगते हो। हम क्या जानें ? चलो, तुम ही हमारे दुखों को दूर कर दो।''

''मैं ही क्यों, तुम स्वयं हाथ उठाओ। कदम बढ़ाओ। हिम्मत से क्या नहीं हो सकता? उठाओ फाल–कुदाल। कुएँ खोदो। प्यासी धरती की प्यास बुझाओ।'' शिष्य बोला।

''कुएँ ! कुएँ तो गाँव में हैं, मगर सारे सूख रहे हैं। उनमें पानी नहीं, तो नए कुओं में कहाँ से आएगा?'' गाँववाले बोले।

''गाँववालों की बातें सुनकर ऋषि का शिष्य मुस्कराया। वह बोला, ''कुओं को सूखने की स्थिति में किसने पहुँचाया? क्या तुम लोगों ने कभी जल संरक्षण के कोई उपाय किए हैं? तुम सब लेने की धुन में लगे रहे, देने की बात किसी ने नहीं सोची। उसी का फल आज भुगत रहे हो। खैर, सुबह का भूला अगर शाम को घर लौट आए तो वह भूला नहीं कहा जाता। चलो, कुओं को और गहरा करो। पानी जरूर निकलेगा। जमीन पर हरियाली फैलेगी तो बादल भी आकर्षित होंगे। वर्षा होगी तो उसका पानी रोकेंगे।''

गाँववालों की समझ में बात आ गई। दूसरे दिन से गाँववाले कुएँ खोदने में जुट गए। श्रम के मोती पसीना बनकर गिरे, तो भगवान की आँखें भी भीग गईं। कुओं से शीतल जल–धारा फूट पड़ी। सूखी धरती हरियाली की चूनर ओढ़कर फिर से मुस्कराने लगी।

एक गाँव की हालत सुधरी। फिर दूसरे की सुधरी। श्रम और साहस का काफिला आगे बढ़ा। ऋषि का शिष्य गाँव–गाँव जाता। अकाल से लोगों को लड़ना सिखाता। दूर–दूर तक उसका नाम फैल गया। सभी उसे आदमी के रूप में 'देवता' समझने लगे। राजा के कानों तक भी यह बात पहुँची।

ऋषि अपने शिष्यों का इंतजार कर रहे थे। एक दिन पहला शिष्य पहुँचा। उसके साथ हाथी–घोड़े थे। उसने सिर झुकाकर कहा, ''गुरुदेव, देखिए राजा ने मेरी योग्यता से प्रसन्न होकर मुझे हाथी–घोड़े भेंट में दिए हैं।'' ऋषि मुस्कराए और चुप रहे। दूसरे दिन दूसरा शिष्य आया। उसने समुद्र से बहुत सारे बहुमूल्य मोती इकट्ठे किए थे। ऋषि ने मोतियों की पोटली ले ली और एक ओर रख दी। कहा कुछ नहीं।

पूरा वर्ष बीत गया। तीसरा शिष्य नहीं लौटा। दोनों शिष्यों को लेकर ऋषि उसकी खोज में चल पड़े। राजदरबारों में गए, मगर पता नहीं चला। नगरों में ढूँढ़ा, किसी ने कुछ नहीं बताया। रास्ते में शाही पालकी जा रही थी। ऋषि को देखकर पालकी रुक गई। राजा नीचे उतरे। ऋषि को प्रणाम किया। ऋषि ने राजा से कहा, ''राजन्! आपकी प्रजा बहुत सुखी है। चारों ओर लहलहाती फसल खड़ी है। आप भाग्यवान हैं।''

''नहीं ऋषिदेव!, यह प्रताप मेरा नहीं, देवता का है। मेरे राज्य में एक देवता ने जन्म लिया है। मैं देवता के दर्शन करने जा रहा हूँ।'' देवता के पैदा होने की बात सुनकर ऋषि भी चकराए। वे भी राजा के साथ चल पड़े।

एक दिन ढूँढते–ढूँढते किसी गाँव में देवता मिल गए। धूल से सने, पसीने से लथपथ, गाँववालों के साथ काम में जुटे थे। राजा चकित रह गया। वह देवता कैसे हो सकता था? वह तो एक साधारण किसान जैसा था। सिर पर न मुकुट था, न गले में स्वर्ण के फूलों की माला। राजा आगे नहीं बढ़ा। चुपचाप खड़ा देखता रहा। मगर ऋषि चिल्लाए, ''बेटा सुबंधु! तुम यहाँ? मैं तुम्हें ही ढूँढ़ता फिर रहा था।'' कहते हुए ऋषि ने धूल–धूसरित सुबंधु को बाँहों में भर लिया। ''क्या मुझे दक्षिणा देने की बात तुम भूल गए हो?'' ऋषि ने कहा।

''नहीं गुरु जी! भूल कैसे जाता? मगर अभी काम अधूरा है। इन सारे लोगों के आँसुओं को पोंछना था। आप ही ने तो बताया था, ''मनुष्य की सेवा से बढ़कर महान धर्म कोई नहीं है।''

राजा देखते रह गए। ऋषि की आँखें भी नम हो गईं। ऋषि ने भरे गले से कहा, ''बेटा! तुमने ठीक ही कहा। तुम्हें सचमुच अब मेरे पास आने की जरूरत नहीं। तुमने इतने लोगों की भलाई करके मेरी दक्षिणा चुका दी है। जो दूसरों के आँसू लेकर उन्हें मुस्कराहट दे दे, वह सचमुच देवता है। तुम देवता से कम नहीं हो।'' राजा का सिर सुबंधु के आगे झुक गया।

शब्दार्थ

निपुण	–	कुशल
तबाह	–	नष्ट
राहगीर	–	रास्ता चलनेवाला
धूलधूसरित	–	धूल में सने हुए
चौकड़ी भरना	–	उछलते हुए तेज दौड़ना
गोताखोर	–	पानी में डुबकी लगानेवाला
पालकी	–	मनुष्यों द्वारा उठाई जाने वाली सवारी

प्रश्न और अभ्यास

प्रश्न 1. ऋषि का आश्रम कैसा था?

प्रश्न 2. गुरु ने शिष्यों की परीक्षा क्यों ली?

प्रश्न 3. ऋषि ने अपने शिष्यों की परीक्षा कैसे ली?

प्रश्न 4. पहला शिष्य कहाँ गया? उसने ऋषि को भेंट में क्या लाकर दिया?

प्रश्न 5. दूसरे शिष्य द्वारा दी गई मोतियों की पोटली का ऋषि ने क्या किया?

प्रश्न 6. ऋषि के तीनों शिष्यों की क्या विशेषताएँ थीं?

प्रश्न 7. सुबंधु ने गाँव में जाकर क्या देखा?

प्रश्न 8. सुबंधु ने गाँववासियों की दशा कैसे सुधारी?

प्रश्न 9. गाँव के लोग सुबंधु को देवता क्यों कहते थे?

प्रश्न 10. गुरु जी ने गुरु–मंत्र पाने का अधिकारी किसे माना? और क्यों?

प्रश्न 11. पहले विद्यार्थी आश्रम में रहकर ही पढ़ाई करते थे। सोचकर बताओ कि आज भी तुम्हें स्कूल में रहकर ही पढ़ना होता तो क्या होता?

भाषातत्व और व्याकरण

गतिविधि

प्रश्न 1. पाठ को पढ़कर खाली स्थानों में, कोष्ठक में से उचित शब्द चुनकर भरो –

क. उन्हें वे प्राणों के समान .... थे। (प्रिय/प्रेम)

ख. राजन्! आप .... हैं। (भाग्यवान/भाग्यमान)

ग. आप हमें .... बता रहे हैं। (बुद्धिमान/बुद्धिवान)

घ. ऋषि की बात सुनकर तीनों ने सिर ....। (झुका लिया/पकड़ लिया)

ङ. वह तो एक .... किसान जैसा था। (असाधारण/साधारण)

प्रश्न 2. नीचे दिए गए खाली स्थानों में रेखांकित शब्दों के विलोम शब्द भरो।

क. सुबंधु की भेंट मूल्यवान थी, पहले शिष्य की भेंट ....थी।

ख. दिनेश और विनय योग्य थे, सुरेश ....था।

ग. यह समस्या छोटी नहीं थी, बहुत ....थी।

घ. तीनों शिष्य परिश्रमी थे, वे .... नहीं थे।

ङ. वह पुराना जमाना था, अब ....जमाना है।

पढ़ो और समझो–

पाठ में आए निम्नांकित वाक्यों को पढ़ो–

क. बहुत–से शिष्य आश्रम में रहते थे।

ख. रास्ते में शाही पालकी जा रही थी।

ग. राजा नीचे उतरे।

घ. राजा ने उस व्यक्ति को ध्यान से देखा।

ऊपर लिखे वाक्यों में रेखांकित शब्दों से हमें किसी–न–किसी कार्य के होने का पता लगता है। **जिन शब्दों से हमें किसी कार्य के होने अथवा करने का पता लगता है, उन्हें 'क्रिया' कहते हैं।** ऊपर के पहले वाक्य में 'रहना', दूसरे वाक्य में 'जाना' तीसरे वाक्य में 'उतरना' और चौथे वाक्य में 'देखना' मूल क्रियाएँ हैं।

प्रश्न 3. पाठ में से कोई पाँच क्रिया शब्द छाँटकर लिखो।

प्रश्न 4. (क) नीचे लिखे वाक्यों में से विशेषण और विशेष्य छाँटो–

क. सैकड़ों आदमी मिलकर भी कोई काम न कर सके।

ख. ऋषि के शिष्य की बात सुनकर सारे लोग सोच में पड़ गए।

ग. सारे कुएँ सूखे पड़े हैं।

घ. प्यासी धरती की प्यास बुझाओ।

(ख) दोनों चौकोर में से विशेषण और विशेष्य लेकर सही जोड़े बनाओ।

लहलहाती, साधारण, अधूरा, महान, नम, धूल–धूसरित	आँखें, किसान, फसल, काम, सुबंधु, धर्म

समझो

गुरु–मंत्र	=	गुरु का मंत्र
ऋषि–मुनि	=	ऋषि और मुनि
धूल–धूसरित	=	धूल से धूसरित
जल–धारा	=	जल की धारा

प्रश्न 6. अब नीचे लिखे शब्दों को इसी प्रकार तोड़कर लिखो–

राज–सिंहासन, लंबा–चौड़ा, गुरु–दक्षिणा, जी–जान, बुरा–भला।

रचना

- 'एक और गुरु–दक्षिणा' कहानी को संक्षेप में अपने शब्दों में लिखो।

योग्यता–विस्तार

- अर्जुन के गुरु का नाम द्रोणाचार्य था। इसी प्रकार निम्नलिखित महापुरुषों के गुरुओं के नाम तलाश करो।

  राम , चंद्रगुप्त, कृष्ण, शिवाजी, कर्ण, विवेकानंद, लवकुश।
- इस कहानी को संवाद का रूप देकर अभिनयपूर्वक कक्षा में प्रस्तुत करो।
- जल संरक्षण संबंधित पोस्टर बनाओ तथा स्लोगन भी लिखो।
- लोगों की भलाई के लिए किया गया कार्य जनहित कहलाता है। अतः दैनिक अखबार पढ़कर पता करो कि किन–किन जगहों पर जनहित के लिए क्या–क्या कार्य हो रहा है?

5KY18H